

गृहं शून्यं सुतां विना

माड्यूल-3

प्रस्तुतकर्ता-

रविकुमार जैन

प्र.स्ना.अध्यापक (चयनमान)

हिंदी /संस्कृत

प.ऊ.के.वि.इंदौर

शालिनी-भ्रातः! त्वम् किम् ज्ञातुमिच्छसि?

शालिनी-भाई! तुम क्या जानना चाहते हो?

तस्याः कुक्षि पुत्रः अस्ति पुत्री वा?

उसके पेट में पुत्र है अथवा पुत्री?

किमर्थम्?

किसलिए(क्यों)?

षणमासानन्तरं सर्वं स्पष्ट भविष्यति,

छह महीने के बाद सब स्पष्ट तो जाएगा,

समयात् पूर्वी किमर्थम् अयम् आयासः?

समय से पहले किसलिए यह कोशिश (हो रही है)?

राकेशः-भगिनि, त्वं तु जानासि एव

राकेश-बहन, तुम तो जानती ही हो

अस्माकं गृहे अम्बिका पुत्रीरूपेण अस्त्येव

हमारे घर में अम्बिका पुत्री के रूप में है ही।

अधुना एकस्य पुत्रस्य आवश्यकताऽस्ति तर्हि.....।

अब एक पुत्र की जरूरत है तो.....

शालिनी-तर्हि कुक्षि पुत्री अस्ति चेत् हन्तव्या?

शालिनी- तो यदि गर्भ में बेटा है तो मार देनी चाहिए?

(तीव्रस्वरेण) हत्यायाः पापं कर्तुं प्रवृत्तोऽसि त्वम् !

(तेज आवाज़ से) आप हत्या का पाप करने जा रहे हैं!

राकेशः-न, हत्या तु न.....

राकेश-नहीं, हत्या तो नहीं.....।

शालिनी-तर्हि किमस्ति निघृणं कृत्यमिदम्?

शालिनी-तो यह घृणा के योग्य कार्य क्या है?

सर्वथा विस्मृतवान् अस्माकं जनकः कदापि पुत्रीपुत्रमयः विभेदं न कृतवान्?

बिलकुल भूल गए हमारे पिता ने कभी पुत्र और पुत्री में यह भेद नहीं किया था?

सः सर्वदेव मनुस्मृतेः पंक्तिमिमाम् उद्धरति स्म

वे सदैव मनुस्मृति की इस पंक्ति का उदाहरण देते थे-

“आत्मा वै जायते पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा”।

“निश्चय से पिता की आत्मा ही पुत्र के रूप में जन्म लेती है और पुत्र के समान ही पुत्री होती है।”

त्वमपि सायं प्रातः देवीस्तुतिं करोषि?

तुम भी सायं-प्रातः देवी की स्तुति करते हो?

किमर्थं सृष्टेः उत्पादिन्याः शक्त्याः तिरस्कारं करोषि?

क्यों सृष्टि की उत्पादक शक्ति का अपमान करते हो?

तव मनसि इयती कुत्सिता वृत्तिः आगता,

तुम्हारे मन में इतनी गलत प्रवृत्ति आ गई,

इदम् चिन्तयित्वैव अहम् कुण्ठिताऽस्मि।

यह सोचकर ही मैं चिन्तित हूँ।

तव शिक्षा वृथा.....

तुम्हारी पढ़ाई बेकार.....

राकेशः-भगिनि! विरम विरम।

राकेश-हे बहन! रुको-रुको।

अहम् स्वापराधं स्वीकरोमि लज्जितश्चास्मि।

मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ और शर्मिंदा हूँ।

अद्यप्रभृति कदापि गर्हितमिदं कार्यम् स्वप्नेऽपि न चिन्तयिष्यामि।

आज से इस निन्दा के योग्य काम (को) स्वप्न में भी करना नहीं सोचूंगा।

यथैव अम्बिका मम हृदयस्य संपूर्ण स्नेहस्य अधिकारिणी अस्ति,

जैसे अम्बिका मेरे दिल (कलेजे) के सारे प्यार की अधिकारी है

तथैव आगन्ता शिशुः अपि स्नेहाधिकारी भविष्यति पुत्रः भवतु पुत्री वा।

वैसे ही आने वाला शिशु (बच्चा) भी प्यार का अधिकारी होगा, चाहे पुत्र हो अथवा पुत्री।